अक्रम यूथ

अगस्त 2018 | हिन्दी दादा भगवान परिवार ₹20

क्या हमने कभी सोचा है

कि हम कितने प्योर हैं?

अक्रम विज्ञान

टेस्ट 'द प्योरिटी

Dada's Youth Network

अनुक्रमणिका

4 ज्ञानी विद यूथ

6 प्योरिटी के फायदे

7 मन-वचन-काया की प्योरिटी

8 महान पुरूषों की झाँकी

9 लक्ष्मी की प्योरिटी

10 मान की प्योरिटी

11 विषय की प्योरिटी

12 ज्ञानी आश्चर्य की प्रतिमा

14 Q and A = मान

15 Q and A = विषय

16 Q and A = लक्ष्मी

17 लक्ष्मी - मान - विषय : प्योरिटी

18 जैसा बोओगे वैसी फसल काटोगे

20 दादाश्री के पुस्तक की झलक

23 Puzzle

वर्ष : ६, अंक : ४
अखंड क्रमांक : ६४
अगस्त २०१८

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Printed at : Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.
Gujarat.

Total 24 Pages with Cover page

Subscription
Yearly Subscription
India :200 Rupees
USA: 15 Dollars
UK: 12 Pounds
5 Years Subscription
India : 800 Rupees
USA: 60 Dollars
UK: 50 Pounds
In India, D.D. / M.O. should be drawn in favour of "Mahavideh Foundation" payable at Ahmedabad.

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org
store.dadabhagwan.org/akram-youth

संपादकीय

पूरा जगत् प्योरिटी ढूँढता है। चीज़ें, व्यक्ति, खाद्य सामग्री, जल और यहाँ तक कि हवा भी सभी को प्योर ही चाहिए। किसी को भी अशुद्धि पसंद नहीं है। लेकिन, क्या हमने कभी सोचा है कि हम कितने प्योर हैं? जीवन व्यवहार में धर्म या अध्यात्म में आगे बढ़ने के लिए हमें प्योरिटी की कितनी आवश्यकता है? दादाश्री की दृष्टि से दैनिक जीवन में लक्ष्मी, मान और विषय की प्योरिटी को मुख्य माना गया है। दादाश्री के जीवन में प्योरिटी के सिद्धांत इस प्रकार जुड़े हुए थे कि उन्होंने धर्म में, व्यापार में और गृहस्थ जीवन में लक्ष्मी, विषय और मान में खुद शुद्ध रहकर जगत् को आदर्श व्यवहार दिखाया।

दादाश्री कहते थे कि खुद अगर व्यवहार में शुद्ध रहे, जहाँ विषय-कषाय से संबंधित विचार भी न हो और भीख संपूर्णत्: खतम हो जाए, तभी जगत् का वास्तविक स्वरूप उसकी समझ में आएगा। लेकिन, अभी ऐसा काल है कि जहाँ मन-वचन-काया की एकता नहीं है इसलिए प्योर बनने की भावना के बावजूद प्योरिटी रख नहीं पाता। इसीलिए दादाश्री कहते हैं कि, "इस दुनिया में जितनी आपकी प्योरिटी रहेगी उतनी दुनिया आपकी।" तो चलो, दादाश्री के इस आशय को समझकर हम भी हमारे जीवन को प्योर बनाने की ओर प्रयाण करें।

-डिम्पल मेहता

ज्ञानी विद यूथ

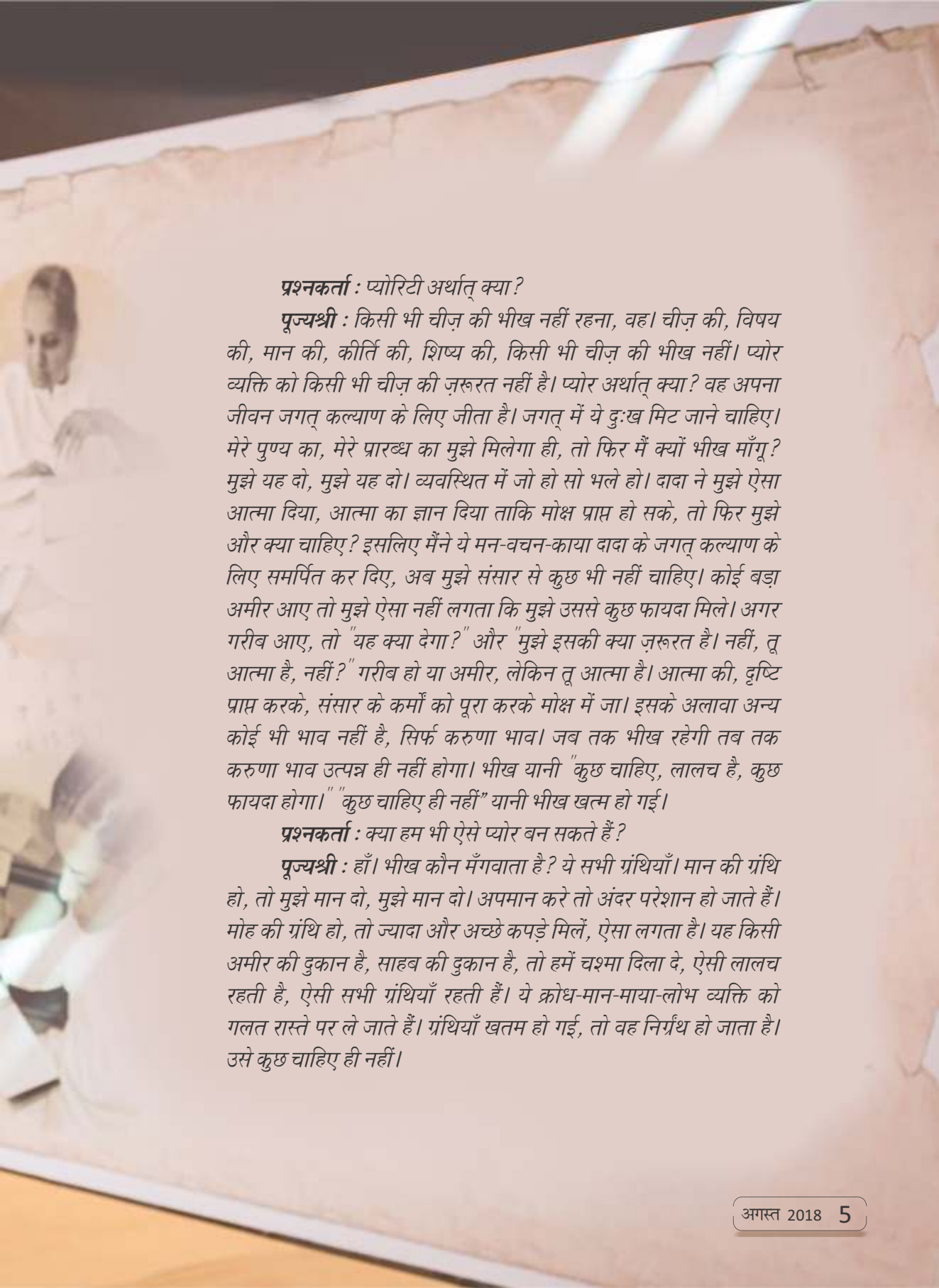

प्रश्नकर्ता : *प्योरिटी अर्थात् क्या?*

पूज्यश्री : *किसी भी चीज़ की भीख नहीं रहना, वह। चीज़ की, विषय की, मान की, कीर्ति की, शिष्य की, किसी भी चीज़ की भीख नहीं। प्योर व्यक्ति को किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। प्योर अर्थात् क्या? वह अपना जीवन जगत् कल्याण के लिए जीता है। जगत् में ये दुःख मिट जाने चाहिए। मेरे पुण्य का, मेरे प्रारब्ध का मुझे मिलेगा ही, तो फिर मैं क्यों भीख माँगू? मुझे यह दो, मुझे यह दो। व्यवस्थित में जो हो सो भले हो। दादा ने मुझे ऐसा आत्मा दिया, आत्मा का ज्ञान दिया ताकि मोक्ष प्राप्त हो सके, तो फिर मुझे और क्या चाहिए? इसलिए मैंने ये मन-वचन-काया दादा के जगत् कल्याण के लिए समर्पित कर दिए, अब मुझे संसार से कुछ भी नहीं चाहिए। कोई बड़ा अमीर आए तो मुझे ऐसा नहीं लगता कि मुझे उससे कुछ फायदा मिले। अगर गरीब आए, तो "यह क्या देगा?" और "मुझे इसकी क्या ज़रूरत है। नहीं, तू आत्मा है, नहीं?" गरीब हो या अमीर, लेकिन तू आत्मा है। आत्मा की, दृष्टि प्राप्त करके, संसार के कर्मों को पूरा करके मोक्ष में जा। इसके अलावा अन्य कोई भी भाव नहीं है, सिर्फ करुणा भाव। जब तक भीख रहेगी तब तक करुणा भाव उत्पन्न ही नहीं होगा। भीख यानी "कुछ चाहिए, लालच है, कुछ फायदा होगा।" "कुछ चाहिए ही नहीं" यानी भीख खत्म हो गई।*

प्रश्नकर्ता : *क्या हम भी ऐसे प्योर बन सकते हैं?*

पूज्यश्री : *हाँ। भीख कौन मँगवाता है? ये सभी ग्रंथियाँ। मान की ग्रंथि हो, तो मुझे मान दो, मुझे मान दो। अपमान करे तो अंदर परेशान हो जाते हैं। मोह की ग्रंथि हो, तो ज्यादा और अच्छे कपड़े मिलें, ऐसा लगता है। यह किसी अमीर की दुकान है, साहब की दुकान है, तो हमें चश्मा दिला दे, ऐसी लालच रहती है, ऐसी सभी ग्रंथियाँ रहती हैं। ये क्रोध-मान-माया-लोभ व्यक्ति को गलत रास्ते पर ले जाते हैं। ग्रंथियाँ खतम हो गई, तो वह निर्ग्रंथ हो जाता है। उसे कुछ चाहिए ही नहीं।*

प्योरिटी के फायदे

कल्याण स्वरूप बन सकते हैं

जगत् का वास्तविक स्वरूप समझ में आएगा

प्योरिटी से परमात्मपद् प्राप्त हो सकता है

हमारी प्योरिटी के कारण सामने वाला भी प्योर मिलेगा

चित्त की संपूर्ण प्योरिटी हो गई यानी पूर्ण हो गया

प्योरिटी पूरे जगत् को आकर्षित करती है

वचनबल उत्पन्न होगा

लोगों का कल्याण कर सकेंगे

प्योर व्यक्ति को किसी का भय नहीं रहता

सामने वाले पर प्रभाव पड़ेगा

प्योरिटी मोक्ष में ले जाएगी

मन-वचन-काया की प्योरिटी

राजा दशरथ की दूसरी पत्नी सुमित्रा के पुत्र थे लक्ष्मण। वे श्रीराम के छोटे भाई और आदिशेष के अवतार थे। बड़े भाई के सुख-दुःख में उन्होंने पूरा साथ दिया था। भाई के प्रति लक्ष्मण का प्रेम निर्मल और प्योर था। पूरी ज़िंदगी वे श्रीराम के परम विनय में रहे और एक साए की तरह साथ निभाया। श्रीराम के साथ रहने के लिए लक्ष्मण ने सुख-संपत्ति, वैभव, समृद्धि सब छोड़ दिया। जंगल के भय से वाकेफ होने के बावजूद भी उन्होंने सबकुछ छोड़ दिया और श्रीराम के साथ जंगल में रहने लगे। श्रीराम, सीता और लक्ष्मण जंगल में दिन बीता रहे थे तब एक दिन सीता का अपहरण कर लिया गया। रावण जब सीता को लंका ले जा रहे थे तब सीता ने अपने गहने ऋषिमुख पर्वत पर फेंक दिए। सुग्रीव को उनमें से कई गहने मिले और उसने अपने पास रख लिए।

श्रीराम और लक्ष्मण सीता को ढूँढते हुए उस पर्वत के पास पहुँचे। सुग्रीव ने अपने पास रखे हुए गहने उन्हें दे दिए। श्रीराम ने गहने लक्ष्मण को देकर उनकी पहचान करने के लिए कहा। सीता के कंगन और कूँडल लक्ष्मण पहचान नहीं पाए लेकिन नूपुर को देखते ही खुशी से कहा, "ये माता सीता के नूपुर हैं।" श्रीराम ने पूछा, "आप कूँडल और कंगन नहीं पहचानते, लेकिन नूपुर पहचानते हैं, ऐसा क्यों?" तब लक्ष्मण ने कहा,

नाहं जानामि केयूरम् , नाहं जानामि कूँडल,
नूपुरम् एव जानामि नित्यं पादाभिवंदानत ॥

मैंने कभी भी माता, सीता के कूँडल और कंगन की ओर नहीं देखा लेकिन जब उनके चरणों की पवित्र रज सिर पर लगाता था तब उनके नूपुर देखे थे। लक्ष्मण मन-वचन-काया से पवित्र एवं निर्मल थे। इस प्रकार उन्होंने श्रीराम और सीता के साथ जंगल में 14 वर्ष बीताए।
अहो! लक्ष्मण की कैसे प्योरिटी!

महान पुरूषों की झाँकी

वकील बनने से पहले अब्राहम लिंकन एक दुकान में कारकुन के तौर पर काम करते थे। वे एक प्रामाणिक व्यक्ति थे। दुकान के मालिक को उन पर पूरा भरोसा था कि वे दुकान अच्छी तरह से संभाल सकेंगे, क्योंकि उन्हें उनकी प्रामाणिकता पर पूरा विश्वास था। ग्राहकों को भी पूरा विश्वास था कि वे उन्हें कभी नहीं ठगेंगे।

एक दिन उनकी दुकान पर एक बार एक महिला आई और अपनी ज़रूरत के अनुसार चीज़ें खरीदकर चली गई। रात में लिंकन जब दुकान बंद कर रहे थे तब हिसाब करते समय उन्हें छः पेनी ज्यादा मिली। वे समझ गए कि उस महिला को पैसे लौटाते समय गलती हो गई है। छः पेनी को देखते हुए वह कोई बड़ी रकम नहीं थी और रात भी हो गई थी, बहुत देर भी हो चुकी थी। वह महिला दुकान से 3 मील की दूरी पर रहती थी, लेकिन उन्होंने कुछ तय किया। दुकान बंद करके 3 मील पैदल चल कर वे उस महिला के घर पहुँचें। उस महिला ने जब दरवाज़ा खोला, तो वह आश्चर्य चकित रह गई। "लिंकन, आप यहाँ क्या कर रहे हैं?" उसने लिंकन से पूछा। लिंकन ने पैसे देते हुए कहा, "गलती से मैंने आपको कम पैसे दिए हैं। मैं अपनी गलती सुधारने आया हूँ।" सिर्फ छः पेनी लौटाने के लिए आप इतनी दूर तक आए?" उसने पूछा और अपना आभार व्यक्त किया।

ऐसी प्रामाणिकता के कारण ही लिंकन को "प्रामाणिक एब" के दुलारे नाम से भी जाना जाता था।

लक्ष्मी की प्योरिटी

ज्ञान लेने से पहले पार्लर चलाती थी, तब ऐसा लगता था कि किस तरह से हमारे पास ज्यादा पैसा आए। तब मेकअप के 500 हों तो 1000 कह देते थे और फिर ऐसा कहते थे कि मेरा कमिशन तो 100 या 200 ही है। सचमुच तो हमें 500 या 600 कमिशन मिलता लेकिन ऐसा गलत कह देते थे कि मेकअप के इतने पैसे लगेंगे। कभी कोई कम पैसे वाला आए तो उससे कहते थे कि वैसे तो मेकअप के 1000 हैं लेकिन आपको 500 में कर देंगे। उसमें भी हम उससे कमिशन तो लेते ही हैं। मेकअप तो 100 रुपए का ही है और हमने उससे ३०० तो ले ही लिए, सेवा तो नहीं की है। तब ऐसा लगता ही नहीं था कि लक्ष्मी में प्योरिटी रखनी चाहिए। जब ज्ञान नहीं था, तब ऐसा नहीं था कि इतना ही कमिशन लेना है, ग्राहक के अनुसार कमिशन लेते थे। ज्ञान लेने के बाद पता चला कि लक्ष्मी में हमारी सिन्सियरिटी नहीं रही। ज्ञान लेने के बाद सामायिक में दिखाई दिया कि, अरेरे! लक्ष्मी के लिए, सिर्फ पैसा कमाने के लिए हमने कितनी अनीति की। ज्ञान के बाद पता चला कि ये सारी लक्ष्मी अनीति की है उसके प्रतिक्रमण भी किए और वह लक्ष्मी जगत् कल्याण के कार्य में खर्च कर दी। अब तो अनीति वाली लक्ष्मी नहीं है लेकिन जो थी वह जगत् कल्याण के लिए खर्च कर दी।

लक्ष्मी तो कैसी है? कमाने में दुःख, संभालने में दुःख, रक्षण करने में दुःख और खर्च करने में भी दुःख। सहज भाव से जमा हो रही हो तो लक्ष्मी जमा करनी है लेकिन आधार नहीं देना है। आधार देकर "आराम से बैठोगे" तो वह आधार कब खिसक जाएगा कह नहीं सकते। इस कलियुग में पैसे का लोभ करके अपना जन्म बिगाड़ते हैं। रुपए का नियम ऐसा है कि कुछ समय तक रहने के बाद जाएगा ही...

मान की प्योरिटी

मैं डेकोरेशन डिपार्टमेन्ट में सेवा देती हूँ। मैं उस सेवा में को-ऑर्डिनेटर हूँ इसलिए ऐसा रहता है कि "मैं कहूँ" वैसा करो और "मैं कहूँ" उतना ही करो। जब डेकोरेशन की सेवा पूरी हो जाती है तब अंत में भाई लोग देखने आते हैं। हर एक सत्संग में, जन्म जयंती में या गुरूपूर्णिमा में भाई लोग देखने आते हैं कि डेकोरेशन ठीक से हुआ है या नहीं। एक बार ऐसा हुआ कि डेकोरेशन पूरा होने के बाद भाई लोग देखने आए आगे स्टेज के पास काम था इसलिए मैं वहीं थी। पहले कुछ नहीं था लेकिन जब भाईयों ने तारीफ करना शुरू किया कि "हाँ, बहुत अच्छा किया है, आइडिया बहुत मस्त है," वे लोग पीछे खड़े रहकर बोल रहे थे और आगे मैं मुस्कुराने लगी कि, "ओहोहो! मैंने बहुत अच्छा किया है, बहुत मस्त किया है," सब मेरी वजह से ही हुआ है, अंदर ये सब चलने लगा। फिर दो-तीन दिनों तक तो इसी कैफ में रही कि मुझे बहुत अच्छा आता है। लेकिन फीडबेक मीटिंग में सारे सेवार्थियों को देखकर एहसास हुआ कि मुझसे बहुत बड़ी गलती हुई है। सभी सेवार्थियों के चेहरे देखकर याद आया कि यह मैंने अकेले ने नहीं किया है, लेकिन पूरी टीम ने मिलकर किया है। तब समझ में आया कि मान का लड्डू तो मैं अकेली ही खा गई। सामायिक में जब देखते हैं तब समझ में आता है कि ऐसा नहीं करना चाहिए।

अर्थात् लोग जब मान दें, तो चखने मे हर्ज नहीं हैं लेकिन साथ में यह भी रहना चाहिए कि यह नहीं चाहिए और मान देने वाले पर राग नहीं होना चाहिए। कृपालुदेव ने इसीलिए लिखा है कि इस दुनिया में मोक्ष क्यों नहीं हो पाता? कहते हैं कि लोभ या अन्य कोई झंझाल नहीं हैं लेकिन अगर मान नहीं होता तो यहीं मोक्ष हो जाता।

विषय की प्योरिटी

मेरे मुहल्ले में एक लड़का रहता था, मुझे पता नहीं था कि वह मुझे देखता रहता है। वह लड़का मेरे भाई का दोस्त था, वे लोग रोज़ साथ उठते-बैठते थे। एक दिन उसने मेरे भाई से मेरा फोन नंबर ले लिया, फिर धीरे-धीरे उसके फोन आने लगे। पहले तो काम के लिए करता था। फिर धीरे-धीरे ज्यादा फोन आने लगे। पहले ऐसा लगता था कि दोस्त है इसलिए करता है लेकिन फिर ज्यादा करने लगा। रोज़ उसके फोन आते और मुझे जवाब देना ही पड़ता था। फिर मुझे लगा कि यह तो लफड़ा है, मैं तो फँस गई। उसके फोन का रोज़ जवाब देना पड़ता और अगर नही दूँ या देर हो जाए तो वह पूछता था कि क्या कर रही थी, क्यों नहीं उठा रही थी? सिर्फ रविवार के दिन मैं उसे कोई जवाब नहीं देती थी। रविवार को मैं YMHT *में जाती थी इसलिए पूरे दिन व्यस्त रहती थी। यानी हफ्ते में एक दिन मैं उसके बारे में सोचती ही नहीं थी और कोई जवाब भी नहीं देती थी। अंदर से मैं समझ गई थी कि यह गलत है, ऐसा नहीं करना चाहिए। भीतर एक ही भाव रहता था कि इसमें से बाहर निकलना है। आप्तपुत्री दीदी से भी कहना चाहती थी लेकिन डर लगता था। एक दिन हिम्मत करके मैनें दीदी से कह दिया कि ऐसा है। दीदी ने मुझे सीखाया कि तू शुद्धात्मा से प्रार्थना कर कि, "हे शुद्धात्मा भगवान, मुझे इस सब में नहीं पड़ना है, इन सब से छूटना है।" मैं रोज प्रतिक्रमण करती थी और शक्ति माँगती थी और एक दिन अपने आप ही उसके फोन आने बंद हो गए। इस प्रकार भाव से, प्रतिक्रमण से और प्रार्थना से मैं इन सभी चीज़ों से छूट गई।*

इस प्रकार यथार्थता से आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान करने से विषय दोष से मुक्ति मिल सकती है और प्योर रह सकते हैं।

ज्ञानी आश्चर्य की प्रतिमा

नीरू माँ की सारी कमज़ोरियों और अपूर्णताओं को दादाश्री ने कुरेद-कुरेद कर निकाला और उनको गढ़ना शुरू किया। नीरू माँ के मान को काटने के लिए दादाश्री उन्हें सभी के सामने डाँट देते कि, "आपको डॉक्टर किसने बनाया?" जब MBBS में नीरू माँ के 70% आए तब उन्हें डॉक्टर बनने का कैफ न रहे इसलिए दादा ने कहा, "नीरू बहन आप कितने मार्क्स से डॉक्टर बनी?" नीरू माँ ने कहा, "दादा 70% से।" दादा ने कहा, "अच्छा, फिर तो आप 30% से फेल डॉक्टर हैं।"

एक बार एक महात्मा नीरू माँ की शिकायत लेकर दादा के पास आए। दादा हकीकत जानते थे कि नीरू माँ की गलती नहीं हैं, फिर भी उन्होंने सभी के सामने नीरू माँ को डाँट दिया। नीरू माँ ने भी कुछ नहीं कहा। जब सत्संग खत्म हो गया तब नीरू माँ ने दादा से पूछा, "दादा, आपको पता था कि इसमें गलती किसकी थी?" दादा ने नीरू माँ से कहा, "अगर उस महात्मा से मैं कुछ कहता तो वे दादा से दूर चले जाते, लेकिन मुझे विश्वास था कि आपको कुछ कहूँगा तो आप कहीं नहीं जाएँगी।" इस तरह नीरू माँ का मान तोडने के लिए दादा ने अलग-अलग प्रकार से नीरू माँ को हिट ट्रीटमेन्ट दी थी।

"नीरू माँ का मान तोड़ने के लिए दादा ने अलग-अलग प्रकार से नीरू माँ को हिट ट्रीटमेन्ट दी थी

दादा कहते थे कि जगत् उसे ही स्वीकारेगा, जो प्योर है। परम पूज्य दादाश्री का संदेश नीरू माँ के सत्संग द्वारा फैलते ही लोगों में बहुत पूज्य भाव उत्पन्न हुआ। परिणाम स्वरूप नीरू माँ को बहुत प्रसिद्धि मिली। लेकिन नीरू माँ ने निरंतर शुद्धता को बनाए रखा। स्व-प्रशंसा से वे कभी भी दूषित नहीं हुई।

इस प्रकार नीरू माँ ने दादाश्री की हिट ट्रीटमेन्ट का परम-विनय से स्वीकार किया और हमें एक अजोड़ ज्ञानी पूज्य नीरू माँ मिले।

प्रश्नकर्ता : *मुझसे मान में प्योरिटी नहीं रह पाती। मैं सभी जगह मान ढूँढती हूँ यानी सेवा करते समय मैं ऐसा कहती हूँ कि, "यह सब मेरी वजह से ही हो रहा है।" तो इसमें से कैसे निकलूँ?*

जवाब : *तुम्हें चेक करते रहना है। टीमवर्क में कोई भी काम अकेले नहीं हो सकता। मान लो तुम परीक्षा में पास हो गई, तो उसमें तो तुम्हें ऐसा ही लगेगा कि यह तो मैंने ही किया है लेकिन उसमें भी खुद को बताना है कि अगर मम्मी-पापा ने फीस नहीं भरी होती तो, अगर दिमाग़ अच्छा नहीं होता, तो? उसे बताना है कि पूर्व के पुण्य के आधार पर ये अच्छे संयोग मिले हैं इसलिए तू यह कर पाई। ऐसे सब संयोग बताने चाहिए और अगर 4-5 लोग मिलकर टीमवर्क कर रहे हों, तो सभी के हिस्से में कुछ न कुछ काम रहते हैं, वे सभी काम दिखाकर, सब के साथ शेयर करना चाहिए, पूरा लड्डू अकेले ही नहीं खा जाना चाहिए। शेयर करना सीखेंगे तो बुद्धि और अहंकार को पता चलेगा कि ऐसा है और अपनी भी दृष्टि खुलेगी। हमें दूसरों का भी देखना चाहिए कि उनका इसमें कितना योगदान है। अगर वे नहीं होते तो उनके योगदान के बगैर आज सफलता कैसे मिलती। तुमने जो किया है, वह कहना है कि, "यह मैंने किया है" लेकिन खुद को यह भी बताना चाहिए कि अगर यह संयोग नहीं मिलता, तो? इस तरह से सारे संयोग बताने हैं, तब व्यवस्थित दिखाई देगा।*

विषय

प्रश्नकर्ता : *इन्टरनेट का दुरुपयोग हो जाता है, तो क्या करूँ?*

जवाब : *उसमें से बाहर निकलने के लिए 4 स्टेप हैं। पहले तो पता चलना चाहिए कि, 'यह गलत' है। फिर दूसरा स्टेप, "गलत है, तो किस प्रकार से गलत है," यह समझना चाहिए। फिर तीसरा स्टेप, "जितनी बार हो जाए उतनी बार प्रतिक्रमण, पश्चाताप करना चाहिए।" और अगर हो जाए तो उपराणां (तरफदारी) नहीं लेना है, वह चौथा स्टेप।*

प्रश्नकर्ता : *कोलेज या अन्य जगह पर जाते हैं, तो लड़के भी दोस्त हें तो उनके साथ बातें, स्पर्श करना, छेड़ना ऐसा सब करते हैं। लफड़ा नहीं है लेकिन दोस्त है, तो भी ऐसा करना तो गलत ही है न?*

जवाब : *पहली बात तो यह है कि हमें मर्यादा में रहना चाहिए और जीवन में कुछ सिद्धांत होने चाहिए। चाहे कैसे भी संयोग हों लेकिन मुझे मेरे सिद्धांत पर चलना है, ऐसा रहना चाहिए। और ऐसा-वैसा कुछ हो गया तो प्रतिक्रमण करना चाहिए और तय करना चाहिए कि अब दोबारा ऐसा नहीं करूँगी। अगर आप प्योर होंगी तो कुदरत से आपको सामने वाला व्यक्ति प्योर मिलेगा। आप अगर शादी करना चाहती हैं तो सामने वाला व्यक्ति आपकी प्योरिटी के आधार पर प्योर मिलेगा। आप अगर प्योर होगी तो आपको छल-कपट नहीं करना पड़ेगा। इम्प्योरिटी से आपको अंदर शांति नहीं रहेगी। दृष्टि बिगाड़े और लड़को के साथ इधर-उधर की बातें करके फिर कहें कि, मुझे प्योर रहना है, तो यह संभव नहीं है। ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि लड़कों के साथ गपशप करने से शांति रहेगी क्या? दृष्टि का आकर्षण होगा ही।*

लक्ष्मी

Q

&

प्रश्नकर्ता : *जनरली सब लोग फॉर्मालिटी करते हैं। कहीं गए हो न, तो कहते हैं कि, "तू रहने दे, मैं तेरे पैसे दे दूँगा।" तब मुझे ऐसा लगता है कि, "ओके, तू दे दे, दूसरी बार मैं दे दूँगा।" तो क्या इसे इम्प्योरिटी कहते हैं?*

जवाब : *हाँ। यह इम्प्योरिटी ही कहलाती है। दादा के कहे अनुसार तब प्योरिटी रखनी चाहिए। तू अगर किसी के साथ कहीं गया हो और वह तेरे पैसे दे दें, तो तूझे भी उसकी किसी चीज़ के पैसे दे देने चाहिए। जैसेकि, एक बार वह पैसे दे, तो दूसरी बार तूझे उसके पैसे दे देने चाहिए। इससे मन संकुचित नहीं बनेगा और व्यवहार में भी यह अच्छा नहीं लगता। व्यक्ति की बुद्धि कभी न कभी तो नोंध करेगी ही। चाहे कितना भी अमीर व्यक्ति हो, हमने उसके घर में पैसे इधर-उधर बिखरे पड़े नहीं देखे यानी उसे भी लक्ष्मी की ज़रूरत है इसलिए हमें उसके पैसे चूकते कर देने चाहिए। अंत में और कुछ नहीं तो कह देना चाहिए कि आपके पैसे मैंने दे दिए हैं, वर्ना उसे दुःख होगा। दुःख होगा तो हमारी इम्प्योरिटी होगी जो हमें शांति नहीं लेने देगी। अतः प्योरिटी रखनी चाहिए।*

A

Truth Table for AND Gate			
x	y	z	w
0	0	0	0
0	0	1	0
0	1	0	0
1	0	0	0
1	1	0	0
1	0	1	0
0	1	1	0
1	1	1	1

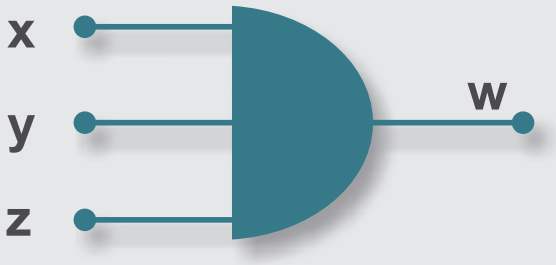

x = मान की प्योरिटी
Y = लक्ष्मी की प्योरिटी
Z = विषय की प्योरिटी

w = आउटपुट (आध्यात्मिक बल्ब)

लक्ष्मी-मान-विषय = प्योरिटी

हम सब डिजिटलाइझेशन से वाकिफ हैं। डिजिटल इन्डिया के लिए भी कई काम चल रहे हैं। इस डिजिटल दुनिया में दो ही अंक राज कर रहे हैं। 0 *और* 1*।* "0" *अर्थात्,* "off" *और* "1" *अर्थात्* "on"*। ये डिजिटल अंक इंजिनियरिंग गेटस् की मदद से काम करते हैं। मुख्यतः तीन गेट्स हैं।* AND, OR *और* NOT*। जिसमें से* AND *गेट का काम यह है कि सारे इनपुट* on *हों तो ही आउटपुट देना है। हमारा जीवन भी* AND *गेट के जैसा ही है। मान, विषय और लक्ष्मी इन तीनों इनपुट की प्योरिटी अगर* ON *होगी तो ही हमारा आध्यात्मिक बल्ब जलेगा। इन तीनों में से अगर किसी भी एक की इम्प्योरिटी यानी* "0" *इनपुट में होगा तो अध्यात्म का बल्ब आउटपुट नहीं देगा।*

जैसा बोओगे वैसी फसल काटोगे

एक महिला छोटे से गाँव में रहती थी। उसका जवान बेटा उसे अकेला छोड़कर दूसरी जगह रहने चला गया था। वह महिला बहुत गरीब और दुःखी थी। वृद्ध महिला स्वाभिमानी थी इसलिए अपने दुःख और आर्थिक हालत के बारे में किसी से कुछ नहीं कहती थी। जैसे-तैसे करके अपने दिन गुज़ार रही थी।

एक दिन अचानक उसके बेटे का संदेश मिलता है कि वह कुछ काम से गाँव में आने वाला है। वह महिला खुशी से नाचने लगती है। वह बहुत खुश होकर बेटे की राह देखते हुए स्वादिष्ट भोजन बनाती है। वह पूरे दिन उसकी राह देखती है लेकिन उसके बेटे के आने के कोई समाचार न मिलने के कारण दुःखी हो जाती है। वह उसे अपना नसीब मानकर भोजन किए बगैर ही अपने रोज़िंदा काम में लग जाती है।

उसी रात एक भिक्षुक उसके घर भीख माँगने आता है। बेटे के वियोग में दुःखी और भूखी होने के कारण महिला को नींद लग जाती है। भिक्षुक के आने पर वह गुस्सा हो जाती है और सोचती है कि यह कहाँ से आ गया? ऐसे खराब भाव के साथ वह भिक्षुक को खाना देने के लिए उठती है। अपने लिए बनाया हुआ भोजन भिक्षुक को देने का सोचकर आगे बढ़ कर देखती है तो, यह क्या? भोजन में तो छिपकली है। वह घबरा जाती है, और सोच में पड़ जाती है कि भोजन तो ज़हरीला बन गया, अब क्या करुँ? तभी उसे विचार आता है कि इसमें क्या है? भिक्षुक को कहाँ पता है कि भोजन ज़हरीला है। यों भी उसे कैसे पता चलेगा कि यह ज़हरीला भोजन किसने दिया है? ऐसा सोचकर वह भिक्षुक को भोजन देने के लिए आगे बढ़ती है लेकिन उसके हाथ काँपने लगते हैं। उसे पसीना आ जाता है और सोचने लगती है कि, "अरेरे। यह क्या? मैं यह क्या करने जा रही थी? मेरी चौखट पर आया हुआ भिक्षुक मेरे कारण मर जाता।" यह सोचते ही उसका शरीर ठंडा पड़ जाता है और उसे अपने-आप पर घिन आती है और बहुत दुःख एवं शर्म आती है कि वह ऐसा घातक काम करने जा रही थी। भिक्षुक को ज़हरीला खाना देने के बजाय वह उसे प्रेम से दो दिन की बासी रोटियाँ दे देती है। अब उसे शांति महसूस होती है कि उसने भिक्षुक के साथ कुछ गलत नहीं किया और फिर से वह अपने रोज़िंदा काम में व्यस्त हो जाती है।

कुछ समय बाद अचानक ही उसके दरवाज़े पर दस्तक होती है। वह दरवाज़ा खोलकर देखती है और आश्चर्यचकित रह जाती है, "अरे! यह क्या? बेटा, तू यहाँ? तू यहाँ क्या कर रहा है?" उसकी आँखे आश्चर्य से फटी रह जाती है कि जिस बेटे का वह सालों से इंतज़ार कर रही थी, वह बेटा बहुत ही बुरी

हालत में उसके सामने खड़ा है। अपने बेटे को घर के अंदर ले जाकर मरहम-पट्टी करके, वह बहुत प्यार से उसे खाना खिलाती है। फिर प्यार से उससे पूछती है कि, अरे! बेटा, यह क्या हो गया? अचानक ऐसी हालत में तू यहाँ कैसे आया? रोते-रोते बेटे ने माँ को अपनी आप बीती सुनाई। "मैं जहाँ रहता था वहाँ मेरा बहुत बड़ा नुकसान हो गया और सब से बचते हुए मुश्किल से मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ। रास्ते में दुर्घटना के कारण मैं घायल हो गया और अपने दुष्कृत्यों के कारण किसी की मदद भी नहीं ले पाया। बड़ी मुश्किल से थोड़ी दूर आया लेकिन भूख और प्यास के कारण मैं और आगे बढ़ नहीं पा रहा था। बहुत कमज़ोरी लग रही थी और अगर खाना नहीं मिलता तो शायद मैं अभी तक जीवित भी नहीं रह पाता। लेकिन अचानक ही वहाँ एक भिक्षुक आया और अपना खाना उसने मुझे दे दिया। खुद भूखे होने के बावजूद अपना खाना मुझे दे दिया। मेरे पास कुछ भी नहीं था इसलिए उनके द्वारा दी गई 2 - 3 बासी रोटियों से मैंने अपनी भूख मिटाई और उन्हें धन्यवाद देकर, थोड़ी हिम्मत जूटा कर मैं गाँव की ओर आगे बढ़ा।" इतना कहकर बेटा सो गया। थकान के कारण बेटा तो सो गया लेकिन माँ गहरी सोच में डूब गई।

वह महिला सोचने लगी कि बासी रोटियाँ तो मैंने ही भिक्षुक को दी थी। उसने मनोमन ही भिक्षुक का आभार माना और सोचने लगी कि अगर उसने भिक्षुक को ज़हरीला भोजन दे दिया होता तो आज वह खुद ही अपने बेटे की मुत्यु का कारण बनती। इतना सोचते ही वह काँप उठी। उसे खुद पर धृणा होने लगी और कि वह कितना भयानक काम करने जा रही थी। मन ही मन भगवान को धन्यवाद देकर, आज के बाद फिर कभी ऐसा नहीं करने का तय किया। क्योंकि अब उसकी समझ में आ गया था कि हमारे द्वारा किए गए अच्छे या बूरे कर्मों को हमें ही भुगतना पड़ता है।

दादाश्री के पुस्तक की झलक

दादावाणी- अक्टूबर २०१७

अनीति-प्रमाणिकता का परिणाम क्या?

ऐसा है न, हिताहित का साधन, खुद क्या करना चाहिए, वह जीव ने कभी सुना ही नहीं है। खुद का हित और अहित किसमें है, इसका कभी भान ही नहीं हुआ है। लोगों का देखकर अपने हिताहित का साधन करता है। लोग पैसों के पीछे पड़ते हैं कि पैसा लाऊँगा, तो सुखी हो जाऊँगा। लेकिन इससे कुछ हित नहीं होता। बाई, बोरो ओर स्टील (खरीदो, उधार लाओ या चोरी करो) इस प्रकार से पैसे लाने से नहीं चलेगा। किसी भी प्रकार से पैसे लाए, ऐसा चलेगा क्या? कुछ नीतिमय तो रहना चाहिए न? नीतिमय पैसे लाने में हर्ज नहीं है। अनीतिमय पैसे लाने का मतलब है अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मारना और जब अरथी निकलेगी तब वह पैसे तो यहीं पड़े रहेंगे। कुदरत की ज़ब्ती में जाएँगे और खुद ने उसके लिए जो मुसीबत मोल ली थी, उसको भुगतना पड़ेगा।

सही राह पर चलने से अंदर शांति रहेगी। भले ही बाहर पैसे नहीं होंगे, लेकिन अंदर शांति और आनंद होगा। गलत ढंग से लाया हुआ पैसे टिकेगा भी नहीं और अंदर दुःखी-दुःखी कर देगा। अतः ऐसा तय करना है कि गलत काम नहीं करुँगा। सभी को सुख देंगे तो सुख मिलेगा और दुःख देंगे तो दुःख मिलेगा।

जो लोग अणहक्क का ले लेते हैं, अणहक्क का भोगते हैं, वे सभी यहाँ से दो पैरों में से चार पैरों में जाते हैं और पूंछ मिलेगी वह अलग। प्रामाणिकता रहनी ही

चाहिए। प्रामाणिकता से ही मनुष्य, फिर से मनुष्य जन्म ले सकता है। इस दुनिया की कोई भी चीज़, अगर एक रुपया भी मैं खर्च करुँ तो मैं नादार बन जाऊँगा। भक्तों का एक पैसा भी खर्च नहीं करना चाहिए। जो लोग ऐसा व्यापार करते हैं वे खुद नादार स्थिति में आ जाएँगे। यानी उनके पास जो सिद्धि है, वह खतम हो जाएगी। थोड़ी-बहुत सिद्धि के कारण लोग आते थे, लेकिन फिर सिद्धि खतम हो जाती है। किसी भी सिद्धि का दुरुपयोग करने से सिद्धि खत्म हो जाती है।

अतः प्योरिटी रहनी चाहिए। हमें अगर पूरे वर्ल्ड की चीज़ें दें तो भी हमें उनकी ज़रूरत नहीं है। इस वर्ल्ड का सोना भी अगर हमें दे, तो भी हमें उनकी ज़रूरत नहीं है। पूरे वर्ल्ड के पैसे दे, तो भी हमें उनकी ज़रूरत नहीं है। स्त्री के बारे में तो विचार तक नहीं आता। यानी इस जगत् में हमें किसी भी प्रकार की भीख नहीं है। आत्मदशा पाना, क्या आसान बात है?

इस ज़हर को ज़हर जाना?

विषय को ज़हर जाना ही नहीं है। जहर जानेगा तो उसे छूएगा ही नहीं न। इसलिए भगवान ने कहा कि ज्ञान का फल विरति! जानने का फल क्या? कि रुक (अटक) जाता है। विषयों का जोखिम जाना नहीं है, इसलिए उसमें रुक नहीं पाता।

भय रखने जैसा हो, तो इस विषय में भय रखने जैसा है। इस जगत् में भय रखने जैसी अन्य कोई जगह ही नहीं है। इसलिए

भगवान ने कहा कि ज्ञान का फल विरति! जानने का फल क्या? के रुक जाता है। विषयों का जोखिम जाना नहीं है, इसलिए उसमें रुक नहीं पाता

विषय से सावधान रहो। ये साँप, बिच्छू, बाघ से सावधान नहीं रहते क्या? सावधान रहते हैं न? जब बाघ की बात हो, तब हमें भय नहीं लगना चाहिए, फिर भी भय लगता है न? इसी प्रकार से विषय कि बात हो, तब भय लगना चाहिए, जहाँ भय हो वहाँ आराम से खाना खा सकता है? नहीं। यानी जहाँ भय है वहाँ आराम नहीं हैं। क्या जगत् इन विषयों को भय से भोग रहा होगा? नहीं। लोग तो आराम से भोगते हैं।

मान के जोखिम

प्रश्नकर्ता : *दादा, जब मान चखते हैं, तब जागृति 'डाउन' हो जाती है न?*

दादाश्री : *जागृति तो कम ही हो जाएगी न। जब मान में कपट होगा, तो जागृति उत्पन्न नहीं होगी। मान में जब कपट रहता है तब मान दिखाई ही नहीं देता। तरह-तरह की विकृतियाँ रहती हैं। मान की विकृति ही मनुष्य को हरा देती है। यानी मान चखने में हर्ज नहीं है। कोई अगर आप से कहे, 'आइए, पधारीए साहब, ऐसा है, वैसा है।' तो आप आराम से मान चखिए लेकिन उसका कैफ नहीं रहना चाहिए। हाँ, आराम से चखिए, अंदर संतोष होगा। लेकिन अगर कैफ चढ़ने लगा, तो हो गया कुरूप। बाकी, जब तक मान रहता है, तब तक मनुष्य कुरूप दिखाई देता है और कुरूप लगने के कारण किसी को आकर्षण नहीं होता। कुरूप लगता है या नहीं लगता? चेहरे पर रूप होने के बावजूद भी कुरूप लगता है।*

कृपालुदेव ने इसीलिए लिखा है कि इस जगत् में मोक्ष क्यों नहीं हो पाता? लोभ या अन्य कोई झंझट नहीं है लेकिन अगर मान नहीं होता तो यहीं मोक्ष होता!

SUBSCRIBE

मंथली मैगेज़ीन

Of the **Youth**
For the **Youth**
By the **Youth**

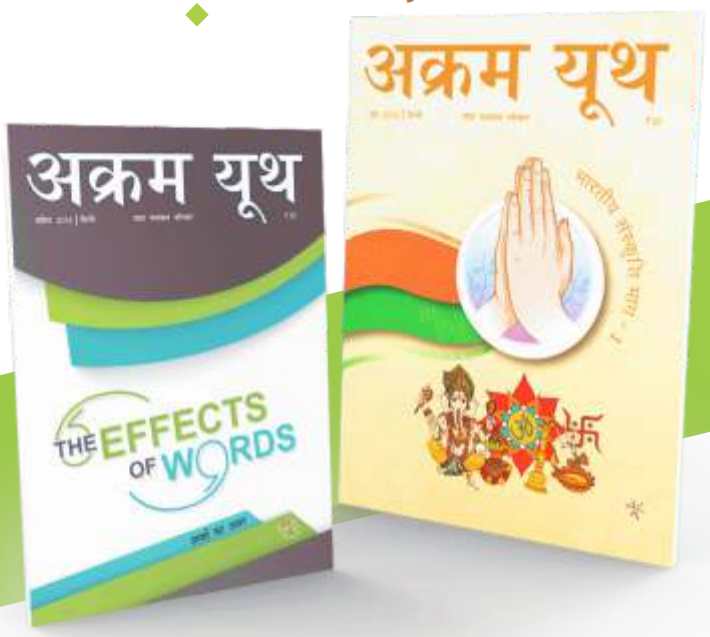

1 Yearly Subscription	5 Yearly Subscription
India : ₹ 200	India : ₹ 800
USA : $ 15	USA : $ 60
UK : £ 12	UK: £ 50

Subscribe Online for print version...
https://store.dadabhagwan.org/akram-youth

OR Call...
+91 79 39830100 / +91 9327010101

PDF Version, available for Free Download at...
https://youth.dadabhagwan.org/gallery/akram-youth/

वर्ष : ६, अंक : ४
अखंड क्रमांक : ६४
अगस्त २०१८

दादाश्री की भावना

पूरी दुनिया, उसमें भी हिन्दुस्तान के मनुष्यों में तो बहुत सारी शक्तियाँ हैं। लेकिन लालचों के कारण शक्तियाँ खत्म हो जाती हैं। अगर प्योर रहा न, तो एक ही व्यक्ति बहुत हो गया। पूरी दुनिया को बदलकर रख देगा। मुझे अगर ऐसे पाँच लोग भी मिल गए, तो बहुत हो गया।

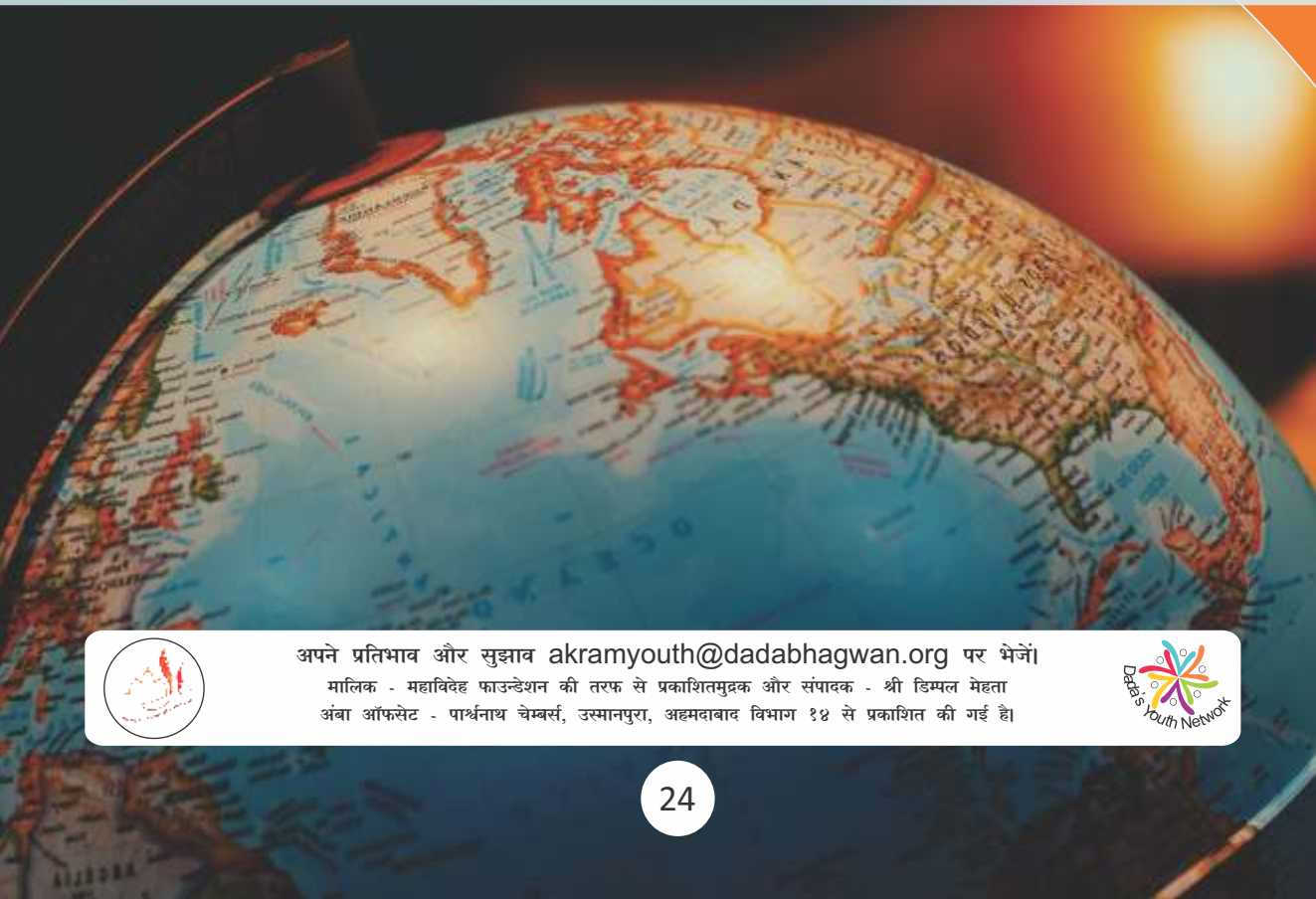

अपने प्रतिभाव और सुझाव akramyouth@dadabhagwan.org पर भेजें।
मालिक - महाविदेह फाउन्डेशन की तरफ से प्रकाशितमुद्रक और संपादक - श्री डिम्पल मेहता
अंबा ऑफसेट - पार्श्वनाथ चेम्बर्स, उस्मानपुरा, अहमदाबाद विभाग १४ से प्रकाशित की गई है।